वेलेंतीना तेरेश्कोवा

# पहली लड़की जिसने धरती के चक्कर काटे

संकलन
आशुतोष उपाध्याय

यूं तो वह एक कपड़ा मिल में मज़दूर थी लेकिन बचपन से ही उसने आकाश में उड़ान भरने का सपना देखना शुरू कर दिया था। यह सपना उसे स्काइ डाइविंग और पैराशूट जम्पिंग के शौक़ की तरफ़ ले गया। और एक दिन उसे दुनिया की पहली महिला अन्तरिक्ष यात्री बनने का गौरव हासिल हुआ। अपनी पहली ही अंतरिक्ष यात्रा में रिकार्ड 48 बार पृथ्वी का चक्कर लगाने वाली यह बेमिसाल लड़की थी सोवियत संघ की वेलेंतीना तेरेश्कोवा। 'औरतें अन्तरिक्ष यात्रा के लायक़ नहीं होतीं'- उस वक़्त की इस स्थापित धारणा को वेलेंतीना ने पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

वेलेंतीना का जन्म 6 मार्च 1937 को पश्चिमी रूस के एक छोटे से गांव मास्लेन्निकोवो के किसान परिवार में हुआ था। पिता व्लादिमीर तेरेश्कोवा और मां एलेना फ्योदोरोव्ना तेरेश्कोवा की तीन संतानों में वह दूसरे नंबर की थी। वेलेंतीना जब मात्र 2 साल की थी, उसके पिता की दूसरे विश्वयुद्ध में

मृत्यु हो गयी। अपने तीन बच्चों का पेट पालने के लिए मां एक कपड़ा मिल में मजदूरी करने लगी।

वेलेंतीना ने आठ वर्ष की उम्र में काफ़ी देर से स्कूल जाना शुरू किया। घर के हालात अच्छे नहीं थे इसलिए जल्दी ही उन्हें काम पर लग जाना पड़ा। 1954 में वेलेंतीना अपनी दादी के पास आ गयीं और एक टायर फैक्टरी में अप्रेंटिस करने लगी। यहां वह मुश्किल से साल भर रह पायीं। परिवार की मदद के लिए उन्हें वापस मां के पास आना पड़ा। इस बार उन्हें कपड़ा मिल में करघा चलाने का काम मिल गया। इन सब कठिनाइयों के बावज़ूद वेलेंतीना ने पढ़ना नहीं छोड़ा और पत्राचार के माध्यम से पढ़ाई करती रहीं। लाइट इंडस्ट्री टेक्निकल स्कूल से उन्होंने ग्रेजुएट डिग्री हासिल की।

काम और पढ़ाई के बीच जो भी समय बचता उसमें वेलेंतीना स्थानीय ऐरोक्लब से

स्काइ-डाइविंग और पैराशूट जम्पिंग के अपने शौक को पूरा करतीं। 22 वर्ष की उम्र में वह पहली बार पैराशूट से कूदीं। पहली बार अंतरिक्ष में कदम रखने वाले यूरी गैगरिन उनके प्रेरणा स्रोत थे। पैराशूट जम्पिंग में महारत हासिल करने में वेलेंतीना को ज्यादा समय नहीं लगा। अब तक वह 126 बार छलांग लगा चुकी थीं और 20,000 फीट की ऊंचाई से भी कूद लेती थीं। उस जमाने में अंतरिक्ष यात्रियों को वापसी के समय पैराशूट के सहारे उतरना पड़ता था। वेलेंतीना की इस क़ाबिलियत ने किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना अंतरिक्ष यात्रा के लिए उनके चुने जाने का रास्ता साफ़ कर दिया।

1962 में वेलेंतीना को सोवियत स्पेस प्रोग्राम के लिए चुन लिया गया। अब वह सोवियत वायु सेना की मानद अधिकारी थीं और जल्दी ही अंतरिक्ष यात्री बनने वाली थीं। उन्हें बेहद कठिन प्रशिक्षण से गुजरना था। उनके हौसले और दमख़म की परीक्षा होनी थी। वेलेंतीना को अकेले यान संभालने और उड़ाने का 18 महीने का कठोर प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें अंतरिक्ष की गुरुत्वहीन परिस्थितियों से जूझने के सामर्थ्य की भी परीक्षा ली जाती थी।

अब तक दुनिया भर में नाम कमा चुके सोवियत अंतरिक्ष यात्री यूरी गैगरिन ने वेलेंतीना के बारे में टिप्पणी की थी, "उसके लिए रॉकेट टेकनीक में महारत हासिल करना और

यान व दूसरे उपकरणों के डिज़ाइन को समझना आसान नहीं था, लेकिन उसने ये सब काम पूरी दृढ़ता के साथ किये और अपना ज्यादातर समय किताबों व नोट्स को खंगालने में बिताया।"

यह ऐतिहासिक शीतयुद्ध का समय था। अमेरिका और सोवियत संघ अंतरिक्ष में पहले नंबर पर आने के लिए जबर्दस्त होड़ कर रहे थे। सोवियत संघ की महिलाओं की क्षमता के बारे में अमेरिकियों की राय अच्छी नहीं थी। सोवियत संघ इसे तोड़ना चाहता था और इसके लिए वह सबसे पहले महिलाओं को अंतरिक्ष में भेजने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा था।

दुनिया की दो सबसे बड़ी ताक़तों के बीच इस प्रतिद्वंद्विता के बीच सोवियत संघ ने पांच महिलाओं को अंतरिक्ष यात्रा के लिए चुना। लेकिन आकाश में उड़ने का सौभाग्य सिर्फ़ वेलेंतीना को मिला। 16 जून 1963 को वेलेंतीना ने वोस्टोक 6 यान को लेकर अकेले उड़ान भरी। दुनिया की

पहली लड़की ने अंतरिक्ष की ओर जाते हुए कहा, "ऐ आसमान, अपनी हैट उतार ले। मैं सफ़र पर निकल पड़ी हूं।"

वेलेंतीना ने कुल 70.8 घंटे यानी क़रीब तीन दिन तक उड़ान भरी और इस दौरान उनके यान ने पृथ्वी के 48 चक्कर लगाये। अब तक किसी भी अंतरिक्ष यात्री ने धरती की इतनी परिक्रमाएं नहीं की थीं। वेलेंतीना से पहले जाने वाले पांच पुरुष अंतरिक्ष यात्रियों में से किसी ने भी पृथ्वी के इतने चक्कर नहीं लगाये थे। सोवियत संघ के ही यूरी गैगरिन केवल एक चक्कर लगा पाए, जबकि चार अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी की 36 परिक्रमाएं की थीं।

वेलेंतीना जब अंतरिक्ष में थीं, सोवियत संघ के सर्वोच्च नेता निकिता ख़्रुश्चेव ने उन्हें संदेश भेजा, "वेलेंतीना इस वक़्त मैं बेहद ख़ुशी और गर्व महसूस कर रहा हूं। सोवियत संघ की एक लड़की अत्याधुनिक यान को लेकर पहली बार अंतरिक्ष में है।" 19 जून 1963 को 20,000 फीट की ऊंचाई से छलांग लगाकर वेलेंतीना ने अपनी यात्रा का समापन किया। अब वह अपने देश का सितारा बन चुकी थीं। राजधानी मास्को में उनका भव्य स्वागत हुआ और उन्हें 'हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन' के ख़िताब के अलावा 'ऑर्डर ऑफ़ लेनिन' व 'गोल्ड स्टार' मेडल से नवाज़ा गया।

वेलेंतीना की यात्रा ने अब तक स्थापित उस धारणा को ध्वस्त कर दिया, जिसके अनुसार महिलाएं अंतरिक्ष यात्रा के

लिए शारीरिक रूप से पुरुषों जितनी सक्षम नहीं होती हैं। वास्तव में वेलेंतीना की यात्रा से पता चला कि गुरुत्वीय बलों को बर्दाश्त करने की सामर्थ्य महिलाओं में पुरुषों से ज्यादा होती है।

1963 में वेलेंतीना ने एन्ड्रियन निकोलायेव से विवाह किया जो स्वयं एक अंतरिक्ष यात्री थे। 1964 में उनकी बेटी येलेना का जन्म हुआ। वेलेंतीना के बाद अगले 19 सालों तक कोई और महिला अंतरिक्ष में नहीं जा सकी। 19 वर्ष बाद सोवियत संघ की ही स्वेतलाना सेवित्स्काया को अंतरिक्ष में जाने का मौका मिला। उसका प्रमुख प्रतिद्वंद्वी अमेरिका तो 1983 में पहली महिला सैली राइड को अंतरिक्ष में भेज पाया।

अंतरिक्ष से लौटने के बाद वेलेंतीना ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने ज़ुकोव्सकी मिलिट्री एयर एकेडेमी से डाक्टरेट की डिग्री हासिल की। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ पदों पर रहकर वह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश का प्रतिनिधित्व करती रहीं। उनके नाम से अनेक देशों के डाक टिकट जारी किए गये।

2007 में वेलेंतीना के 70वें जन्मदिवस पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने उन्हें आमंत्रित किया। इस मौक़े पर वेलेंतीना ने कहा, "अगर मेरे पास पैसे होते तो मैं मंगल की सैर का आनंद लेती।" 1915 में लंदन के एक विज्ञान संग्रहालय में वोस्टोव 6 यान को प्रदर्शन के लिये रखा गया। वेलेंतीना भी प्रदर्शनी में आमंत्रित थीं। यहां अपने यान को उन्होंने "मेरा सबसे अच्छा व सबसे खूबसूरत दोस्त" बताया।

विज्ञान और महिलाओं पर वेलेंतीना ने एक अमेरिकी

पत्रिका में लिखा, "मैं मानती हूं कि एक स्त्री सदैव एक स्त्री रहती है और स्त्रीत्व का कोई भी पक्ष उससे अछूता नहीं है। साथ ही दृढ़ता के साथ मैं यह भी महसूस करती हूं कि विज्ञान, संस्कृति या किसी भी क्षेत्र में कोई भी कठिन से कठिन काम ऐसा नहीं है जो उसके प्राचीन 'लाजवाब उद्देश्य'- प्रेम करने, प्रेम किये जाने और मातृत्व के आनंद की इच्छा के आड़े आता हो। इसके विपरीत उसके जीवन के ये दोनों पहलू एक-दूसरे के पूर्णतया पूरक हैं।"

वेलेंतीना तेरेश्कोवा आज भी न केवल अपने देश के लिए एक आदर्श हैं बल्कि उन सब महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं जो इस पुरुष प्रधान दुनिया में अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं।